भारत के सूती वस्त्र उद्योग का भौगोलिक वितरण

Dr. Sabiha Khan

- कपास न केवल भारत की बल्कि पूरे विश्व की सबसे महत्वपूर्ण फाइबर फसल है।
- यह सूती कपड़ा उद्योग को मूल कच्चा माल (कपास फाइबर) प्रदान करता है।
- कपड़ा बनाने के लिए सूती फाइबर का उपयोग प्राचीन मिस्र के लोगों को ज्ञात था, और सदियों से कपास चीन, भारत और मध्य एशिया का प्रमुख कपड़ा रहा है।
- लेकिन 18 वीं शताब्दी तक यूरोप में सूती कपड़ा प्रचलन में बना रहा, जब कपास की मशीनों और मशीनीकृत कताई और बुनाई प्रक्रियाओं के आविष्कार ने इसे सस्ते में बड़े पैमाने पर उत्पादन करने की अनुमति दी।
- इस प्रकार, 19 वीं शताब्दी में, सूती कपड़ा उद्योग न केवल शुरू हुआ बल्कि यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों में तेजी से विकसित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कपास की खेती में वृद्धि हुई।

- भारत का सबसे प्राचीन एवं बड़ा उद्योग है- सूती वस्त्र उद्योग।
- सूती वस्त्र उद्योग की उत्पत्ति 1818 ई. से हुई है जब पहली बार सूती कपड़ा मिल कलकत्ता के पास फोर्ट ग्लस्टर में शुरू की गई थी, लेकिन पहली भारत की आधुनिक सूती कपड़ा मिल की स्थापना 1854 में बॉम्बे स्पिनिंग एंड वीविंग द्वारा स्थानीय पारसी उद्यमी द्वारा की गई थी।
- भारत में सूती वस्त्र उद्योग को चार क्षेत्रों में वितरित किया गया है:-
- पश्चिमी क्षेत्र,दक्षिणी क्षेत्र, उत्तरी क्षेत्र और पूर्वी क्षेत्र।
- महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में इस उद्योग की एकाग्रता बहुत अधिक है और विशेष रूप से बंबई, अहमदाबाद और कोयम्बटूर के तीन शहरों में।

- **<u>कपास के प्रकार</u>**
- गॉसिपियम परिवार के पौधों के बीजों के आसपास के बालों से कपास निकाली जाती है। पौधे के कई प्रकार हैं, जिनमें से कुछ यूरेशिया में और कुछ अमेरिका में उत्पन्न हुईं, जबकि आधुनिक किस्मों का विकास प्रजनन(breeding)और संकरण(hybridisation) द्वारा किया गया है।

  फाइबर की मुख्य लंबाई के आधार पर, कपास के तीन मुख्य प्रकार हैं:-
- **लंबी रेशे वाली कपास**:- लम्बे रेशे वाले कपास सबसे सर्वोत्तम प्रकार के होते हैं, जिसकी लम्बाई 5 सें.मी. से अधिक होती है। इससे उच्च कोटि का कपड़ा बनाया जाता है। तटीय क्षेत्रों में पैदा होने के कारण इसे 'समुद्र द्वीपीय कपास' भी कहते हैं।
- **मध्य रेशे वाली कपास**:-मध्य रेशे वाली कपास, जिसकी लम्बाई 3.5 से 5 सें.मी. तक होती है। इसे 'मिश्रित कपास' भी कहते है।
- **छोटे रेशे वाली कपास**:-इसके रेशे की लम्बाई 3.5 सें.मी. तक होती है।

- उद्योग की स्थापना को प्रभावित करने वाले कारक:-
- सूती वस्त्र उद्योग निम्नलिखित कारकों के द्वारा प्रभावित होते हैं:-
- **कच्चे माल**:- सूती वस्त्र उद्योग के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक कच्चा माल है। इसका कच्चा माल मुख्य रूप से कपास होता है। विश्व के बहुत से भागों में तथा कपास उत्पादक क्षेत्रों में विकसित हुआ है। भारत के बम्बई, अहमदाबाद तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के कपास की पेटी में विकसित उद्योग इसके प्रमुख उदाहरण है। कपास एक हल्का कच्चा माल है जिसके भार का ह्रास नहीं होता हैं। अतः इसे कम परिवर्तन व्यय पर दूर तक ले जाया जा सकता है। [ब्रिटेन में कपास बिल्कुल नहीं होता फिर भी विश्व में आधुनिक सूती वस्त्र उद्योग सबसे पहले वहीं पर स्थापित किया गया है। कपास के अतिरिक्त धागे तथा कपड़ों की रंगाई और धुलाई के लिए विभिन्न प्रकार के रंगों एवं रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता होती है यह भी सूती वस्त्र उद्योग के कच्चे माल के रूप में जाने जाते हैं और यह भी आवश्यक कच्चे माल हैं।
- **शक्ति के साधन**:- किसी भी उद्योग में चालक शक्ति प्राण संचार करती है। अधिकांशतः सूती वस्त्र उद्योग में कोयले से चालक शक्ति प्राप्त की जाती है। इसलिए यह उद्योग कोयला क्षेत्रों के निकट स्थापित किया जाता है। ब्रिटेन के लंकाशायर में सूती वस्त्र उद्योग का विकास इसका अच्छा उदाहरण है।यदि कोयला निकट ना हो तो उसे अन्य क्षेत्रों से प्राप्त करने की सुविधा होनी चाहिए। उदाहरणतः मुंबई के निकट कोई कोयला क्षेत्र नहीं है और यहां पर अफ्रीका से कोयला प्राप्त किया जाता है। अब कोयले के स्थान पर जल विद्युत का उपयोग अधिक होने लगा है। यह कोयले की अपेक्षा सस्ती होती है इसके प्रयोग से गंदगी नहीं फैलती और वातावरण का प्रदूषण नहीं होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यू इंग्लैंड राज्य, जापान स्विट्जरलैंड, इटली, भारत आदि देशों के अधिकांश कारखाने जल विद्युत से ही चलते हैं।

- **सस्ता परिवहन**:-जिन देशों में सस्ता परिवहन की सुविधा होती है, उनमें कपास की उपज न होने पर भी सूती वस्त्र उद्योग विकसित किया जा सकता है, क्योंकि सस्ते परिवहन की सहायता से यह हल्का कच्चा माल विदेशों से आयात किया जा सकता है। ब्रिटेन को सस्ते परिवहन के कारण ही भारत, पाकिस्तान, मिस्र, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि देशों से कपास प्राप्त होती है। जापान भी परिवहन की सुविधा के कारण विदेशों से कपास का आयात करके सूती वस्त्र उद्योग को चलाता है।
- **अनुकूल जलवायु**:-शुष्क जलवायु में धागा बार बार टूटता रहता है जिससे सूत काटने तथा कपड़ा बुनने में बड़ी कठिनाई आती है। अतः इसके लिए आद्र जलवायु तथा समुद्री समीर उपयुक्त होती है।यही कारण है कि अधिकांश सूती वस्त्र उद्योग समुंद्र के निकट या आद्र जलवायु वाले क्षेत्रों में स्थापित किए जाते हैं।आजकल शुष्क जलवायु वाले इलाकों में कृत्रिम आद्रीकरण से भी यह उद्योग चलाया जाता है, परंतु इस पर व्यय अधिक होता है। अनुकूल जलवायु के कारण ही ब्रिटेन, जापान, रूस तथा भारत के महाराष्ट्र व गुजरात में यह उद्योग उन्नति कर रही है। इसके अतिरिक्त जलवायु का स्वास्थ्यवर्धक होना भी अनिवार्य है जिससे श्रमिकों तथा प्रबंधकों का स्वास्थ्य ठीक रहे तथा वे अधिक उत्पादन दे सकें।
- **श्रम** :- सूती वस्त्र उद्योग में कुल उत्पादन लागत का बहुत बड़ा हिस्सा श्रम पर खर्च किया जाता है। इसलिए इस उद्योग के लिए सस्ते तथा कुशल सांग का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना अनिवार्य है। अनुमान है कि विश्व में सबसे अधिक श्रम वस्त्र उद्योग में लगा हुआ है। यही कारण है कि उद्योग अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में स्थापित किया जाता है।
- **जलापूर्ति** :- सूती वस्त्र उद्योग में वस्त्रों की धुलाई, रंगाई, छपाई, कलफ करने आदि के लिए बड़ी मात्रा में शुद्ध जल की आवश्यकता होती है। अतः यह उद्योग जल आपूर्ति के स्रोत के निकट ही स्थापित कियां जाता है। सामान्यतः नदियों, तालाबों तथा नलकूप आदि से जल प्राप्ति किया जा सकता है।

- **पूंजी** :- इस उद्योग में पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका,जापान आदि देशों में इस उद्योग के विकास में पूंजी निवेश का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए पूंजी निवेश होना अनिवार्य है।
- **बाजार** :-यदि बाजार तथा कपास उत्पादक क्षेत्रों में अन्य कारकों की अनुकूलता एक जैसी हो तो इस उद्योग की अवस्थिति में बाजार का अधिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि बकरे की सुविधा के साथ-साथ परिवर्तनशील मांग तथा फैशन के अनुसार उत्पादन में परिवर्तन किया जा सकता है।ब्रिटेन तथा जापान में कपास की उपज ना होते हुए भी बाजार का लाभ उठाने के लिए या उद्योग स्थापित किया गया। ब्रिटेन के भूतपूर्व उपनिवेशों में यहां का बहुत सा कपड़ा बिकता है और जापान को दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में बाजार की बहुत सुविधा मिली है। भारत, रूस तथा कुछ अन्य देशों में घरेलू खपत के कारण यह उद्योग बहुत उन्नति कर गया है।
- **सरकारी प्रोत्साहन** :-किसी भी देश की सरकार उद्योग को प्रोत्साहन देकर उसके विकास में सहायता कर सकती है। भारत में बहुत से वस्त्र उद्योगों के विकास का श्रेय सरकार को जाता है।ब्रिटेन में राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने के लिए सरकार ने इस उद्योग को प्रोत्साहित किया। वहां की सरकार ने अपने उपनिवेशों में सूती वस्त्रों को बाजार प्रदान करके इसकी विशेष सहायता की है।

Year	2014-15			2015-16			2016-17			2017-18			2018-19(P)*		
State	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield
Punjab	4.20	13.00	526	3.39	6.25	313	2.85	9.00	537	2.91	11.76	687	2.68	11.50	729
Haryana	6.48	23.00	603	6.15	14.50	401	5.70	20.50	611	6.65	21.48	549	7.08	23.00	552
Rajasthan	4.87	17.00	593	4.48	15.00	569	4.71	16.50	596	5.84	23.26	677	6.29	25.00	676
North total	**15.55**	**53.00**	**579**	**14.02**	**35.75**	**433**	**13.26**	**46.00**	**590**	**15.40**	**56.50**	**624**	**16.05**	**59.50**	**630**
Gujarat	27.73	112.00	687	27.22	90.00	562	23.82	95.00	678	26.24	103.84	673	26.59	87.00	556
Maharashtra	41.90	80.00	325	42.07	76.00	307	38.00	88.50	396	43.51	83.35	326	42.54	77.00	308
Madhya Pradesh	5.74	19.00	563	5.63	18.00	544	5.99	20.50	582	6.03	22.14	624	6.14	24.00	664
Central total	**75.37**	**211.00**	**476**	**74.92**	**184.00**	**418**	**67.81**	**204.00**	**511**	**75.78**	**209.33**	**470**	**75.27**	**188.00**	**425**
Telangana	17.13	50.50	501	17.73	58.00	556	14.09	48.00	579	18.97	54.44	488	18.27	47.00	437
Andhra Pradesh	8.21	26.50	549	6.66	23.75	606	4.72	19.00	684	6.46	21.26	559	6.21	15.00	411
Karnataka	8.75	34.00	661	6.42	19.50	516	5.10	18.00	600	5.47	17.32	538	6.88	15.00	371
Tamil Nadu	1.87	6.00	545	1.42	6.00	718	1.42	5.00	599	1.83	5.50	511	1.31	6.00	779
South Total	**35.96**	**117.00**	**553**	**32.23**	**107.25**	**566**	**25.33**	**90.00**	**604**	**32.73**	**98.52**	**512**	**32.67**	**83.00**	**432**
Orissa	1.27	3.00	402	1.25	3.00	408	1.36	3.00	375	1.45	3.65	428	1.58	4.50	484
Others	0.31	2.00	1097	0.50	2.00	680	0.50	2.00	680	0.50	2.00	680	0.50	2.00	680
GR TOTAL	**128.46**	**386.00**	**511**	**122.92**	**332.00**	**459**	**108.26**	**345.00**	**542**	**125.86**	**370.00**	**500**	**126.07**	**337.00**	**454**

Source : Cotton Advisory Board **P-Provisional**

*As per CAB meeting dated 18-06-2019

Note: Production is inclusive of state-wise loose cotton production of 26.10 lakh bales from 2010-11onwards as per survey of Loose Cotton delivery and consumption in india undertaken by ATIRA.

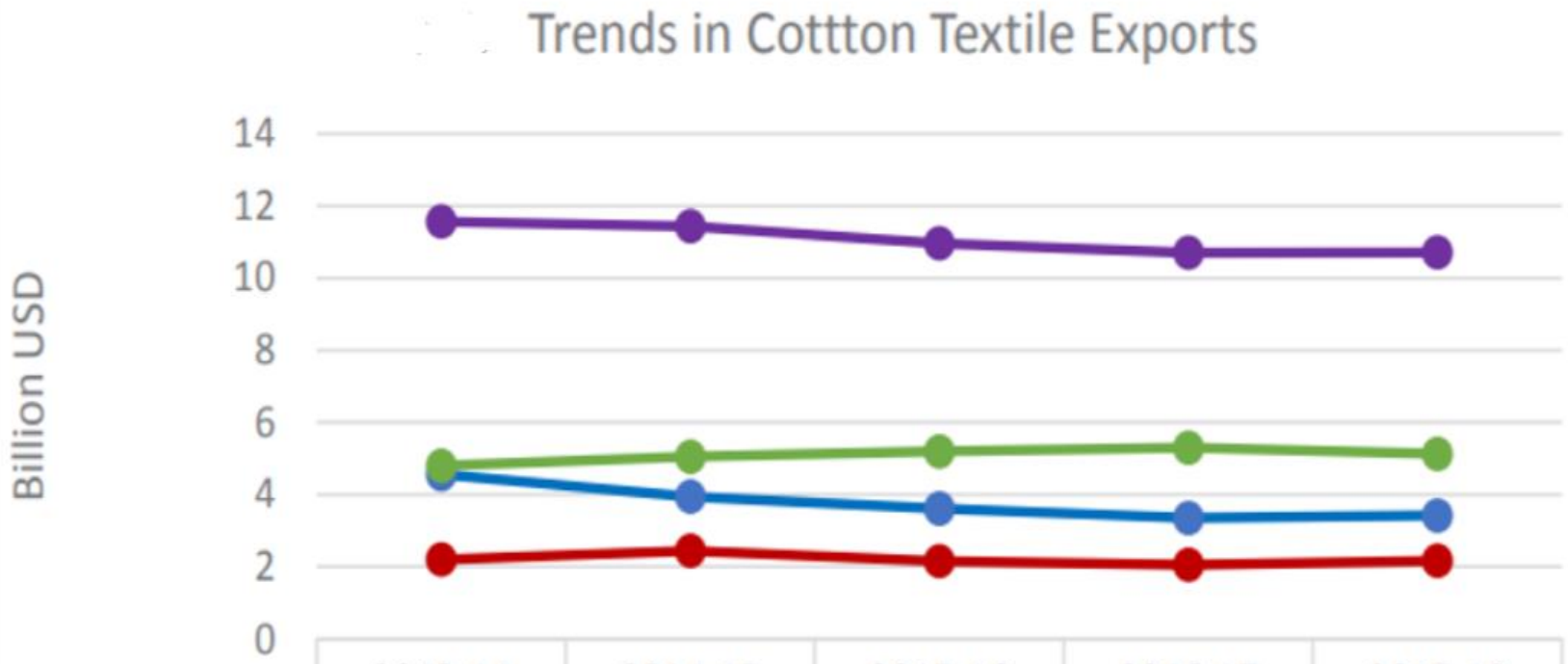

	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18
Yarn	4.56	3.94	3.61	3.35	3.42
Fabric	2.20	2.44	2.15	2.05	2.16
Made-ups	4.80	5.05	5.20	5.30	5.13
Total	11.56	11.43	10.96	10.70	10.71

- भारत के सूती वस्त्र उद्योग का भौगोलिक वितरण

1. महाराष्ट्र

यह भारत में सूती वस्त्रों का प्रमुख निर्माता है। मुंबई को "कॉटनपोलिस ऑफ इंडिया" भी बोला जाता है। कपड़ा उद्योग शोलापुर, कोल्हापुर, पुणे, जलगाँव, अकोला, सांगली, नागपुर, सतारा, वर्धा, औरंगाबाद और अमरावती तक भी फैल हुआ है।

- 2. गुजरात

  यह महारास्ट्र के बाद सूती वस्त्रों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। अहमदाबाद को
  'भारत का मैनचेस्टर और पूर्व का बोस्टन' कहा जाता है और यह मुंबई के बाद
  सूती वस्त्र उद्योग का दूसरा सबसे बड़ा केंद्र भी है। इस राज्य के अन्य महत्वपूर्ण
  केंद्र सूरत, वडोदरा, भरूच, भावनगर, नाडियाड, पोरबंदर, राजकोट, नवसारी,
  मोरी और वीरमगाम हैं।

- 3. तमिलनाडु

  चेन्नई, तिरुनेलवेली, मदुरै, तूतीकोरिन, सलेम, विरुदनगर और पोलाची इस राज्य
  के प्रमुख सूती कपड़ा केंद्र हैं। कोयंबटूर को 'दक्षिण भारत का मैनचेस्टर' कहा
  जाता है।

  4. उत्तर प्रदेश

  कानपुर, इटावा, मोदीनगर, मुरादाबाद, बरेली, हाथरस, आगरा, मेरठ और वाराणसी प्रमुख कपास उत्पादक केंद्र हैं। कानपुर को 'उत्तर प्रदेश का मैनचेस्टर'
  कहा जाता है।

- 5. कर्नाटक

  बैंगलोर, बेलगाम, मंगलौर, चित्रदुर्ग, गलबर्गा और मैसूर प्रमुख सूती वस्त्र
  उत्पादक केंद्र हैं।

  6. मध्य प्रदेश

  इंदौर, ग्वालियर, मंदसौर, देवास, उज्जैन, नागदा, भोपाल, जबलपुर और रतलाम
  प्रमुख कपास उत्पादक केंद्र हैं।

- 7. राजस्थान

  कोटा, जयपुर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, भवानीमंडी, उदयपुर और किशनगंज प्रमुख
  सूती वस्त्र उत्पादक केंद्र हैं।

  8. पश्चिम बंगाल

  राज्य में प्रमुख सूती वस्त्र उत्पादन केंद्र कोलकाता, हावड़ा, सीरमपुर, श्यामनगर,
  सैकिंया, मुर्शिदाबाद, हुगली और पनिहार हैं।

THANK YOU

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.